संवाद-लेखन - किसी भी विषय पर जब दो या दो से अधिक व्यक्ति बातचीत करते हैं, तो उस बातचीत को संवाद कहते हैं। जब बातचीत को लिखित रूप दिया जाता है, तो उसे संवाद-लेखन कहा जाता चाहिए।

संवाद-लेखन के समय निम्नांकित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए-

(क) संवादों को लिखते समय सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(ख) संवाद छोटे-छोटे होने चाहिए।

(ग) संवाद पात्र के स्वभाव और उसकी योग्यता के अनुसार होने चाहिए।

(घ) संवादों का प्रयोग एकांकी, नाटक, धारावाहिकों, फ़िल्मों आदि में देखने को मिलता है।

उदाहरण-

1. गरमी की छुट्टियों में यात्रा के संबंध में भाई-बहन का संवाद।

केशव - गरमी की छुट्टियों में इस बार हरिद्वार चलेंगे।

शिवानी - नहीं, इस बार मसूरी चलेंगे।

केशव - मसूरी जाकर क्या करेंगे? पिछली बार ही तो गए थे।

शिवानी - हरिद्वार भी तो जा चुके हैं।

केशव - हरिद्वार में उड़न खटोले से मनसा देवी और चंडीदेवी जाने में कितना मज़ा आया था।

शिवानी - हाँ, मज़ा तो मुझे भी आया था। पर मसूरी में पहाड़ों के बीच में जाना अधिक अच्छा लगता है।

केशव - नैनीताल चलते हैं। वहाँ नहीं गए हैं।
कशव - गरमी की छुट्टियों में इस बार हरिद्वार चलेंगे।

शिवानी - नहीं, इस बार मसूरी चलेंगे।

केशव - मसूरी जाकर क्या करेंगे? पिछली बार ही तो गए थे।

शिवानी - हरिद्वार भी तो जा चुके हैं।

केशव - हरिद्वार में उड़न खटोले से मनसा देवी और चंडीदेवी जाने में कितना मज़ा आया था।

शिवानी - हाँ, मज़ा तो मुझे भी आया था। पर मसूरी में पहाड़ों के बीच में जाना अधिक अच्छा लगता है।

केशव - नैनीताल चलते हैं। वहाँ नहीं गए हैं।

शिवानी - केशव हाँ, चलो।)

शिवानी - हाँ, ठीक कह रहे हो, चलो मम्मी-पापा से भी कहते हैं कि हमें छुट्टियों में नैनीताल ले चलें।

विज्ञापन-लेखन

विज्ञापन-लेखन - किसी उत्पाद अथवा सेवा को बेचने अथविज्ञापन-लेखन वा प्रवर्तित करने के उद्देश्य से किया जाने वाला जनसंचार, विज्ञापन (Advertisement) कहलाता है।

विज्ञापन-लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

कम से कम शब्दों में विज्ञापन होना चाहिए।

शब्दों में गागर में सागर भरने की क्षमता होनी चाहिए।

भाषा सरस, रोचक तथा प्रभावपूर्ण होनी चाहिए।

उदाहरण-

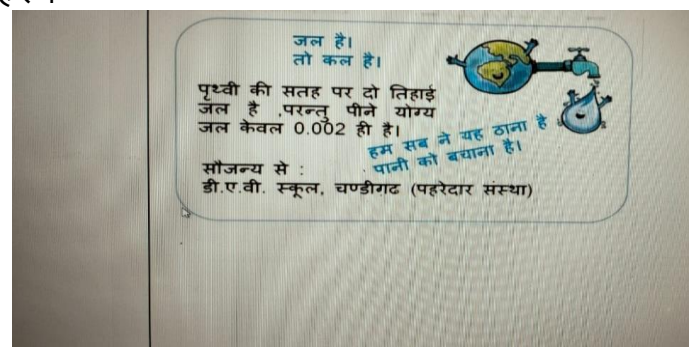

SUB.TEACHER HOD CO ORDINATOR PRINCIPAL